रिकॉर्ड :– आज अंधेरे में हैं हम इनसान..... ॐ पिताश्री 11/5/63
ओम् शांति। यह पुकार है भक्तों की किस प्रति? उनको शमा भी कहते, ज्ञान सूर्य भी कहते हैं। परमपिता प० की महिमा तो सभी से जास्ती है। क्या करते हैं? इस घोर अंधियारे को सोझरा देते हैं। यह तो गाया भी गया है– ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। अब ब्रह्मा कौन–सा? यह तो मनुष्य नहीं समझते। बच्चों को समझाया गया है, यह वो ही प्राचीन भारत का सहज राज्य–योग और ज्ञान है। लिटरेचर में अक्षर ही ऐसे लिखना है– प्राचीन भारत का प्रायःलोप हुआ सहज राज्य–योग और सृष्टिचक्र के आदि–मध्य का ज्ञान। वो है सहज राजयोग। अब बुद्धि का योग उस परमपिता परमात्मा के साथ लगाना है। यहाँ कोई का भी उनसे बुद्धि का योग न है। अर्थात् अपने पारलौकिक परमधाम में रहने वाले बाप के साथ योग न है। अर्थात् नास्तिक हैं। फिर उसका नतीजा क्या निकला है– आपस में लड़ाई–झगड़ा। घर में कोई लड़ते हैं, तो कहते हैं कि तुम्हारा कोई माँ–बाप है व निधणके हो? तो इस समय सभी निधणके हैं। अर्थात् न धणी के। धणी कहा जाता है बाप को। वो है त्रिमूर्ति। ब्र०वि०शं० से कार्य कराते हैं– स्वर्ग की स्थापना। यह तो बहुत अच्छा कार्य है। बाप ज़रूर अच्छा कार्य ही करेंगे। फिर विनाश क्यों कराते हैं? बरोबर लगा हुआ है– पांडवों तरफ डिक्टेटर भगवान था। कृष्ण तो हो न सकता। भगवान कहा जावेगा, भगवान बैठ विनाश कराते हैं। कृष्ण देवता कैसे विनाश करावेंगे! यह तो ठीक नहीं है। अच्छा, भगवान था, युद्ध का मैदान था, क्या भगवान अपने बच्चों को आपस में लड़ाए विनाश कराते थे! यह भी तो उन पर कलंक हो गया। थे तो भाई–2 पांडव–कौरव। भाई–2 को फिर आपस में लड़ाना, यह कहाँ का काम! यह भी कलंक हुआ न! अब कृष्ण भगवान थोड़े ऐसे काम करते हैं। यह तो ड्रामा अनुसार नूँध है। इस समय में सृष्टि का विनाश कैसे हो? तो देखो, ड्रामा में उनका पार्ट है, जो साइंस से मूसल निकाल और अपने कुल का विनाश कराते हैं। यह ड्रामा में उनका पार्ट नुँधा हुआ है। विनाश तो ज़रूर होना है न! स्थापना है एक धर्म की। सतयुग में है एक धर्म। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। इसमें फर्क कुछ भी नहीं पड़ सकता। ऐसे नहीं, प्रजापति ब्रह्मा के बदले दूसरा बना देंगे। यह तो बना–बनाया ड्रामा है। कोई भी मोक्ष को पाए नहीं सकते। बनी–बनाई बन रही अब कुछ बनना नाहीं। इस समय मनुष्य सभी दुखी हैं। सुखधाम, दुखधाम और शांतिधाम– तीन धाम गाए जाते हैं। हम आते हैं शांतिधाम से। वो है निर्वाणधाम। हमारी आत्मा साइलेंस है। यह ऑरगन्स हैं, जिससे वाणी चलाई जाती है। अहम् आत्मा निर्वाण धाम में रहने वाली है। सभी निर्वाणधाम से आती हैं इस टॉकी धाम में पार्ट बजाने। वास्तव में धाम केवल सतयुग को ही कहेंगे। दुखधाम नहीं कह सकते; क्योंकि धाम अक्षर उत्तम है; परन्तु मिलाने लिए ऐसे कहते हैं। अभी सभी मनुष्य घोर अंधियारे में हैं। कितने शास्त्र आदि पढ़ते हैं; परन्तु समझते नहीं। अभी बाप ने रोशनी दी है तो समझते हैं– वेस्ट ऑफ टाइम करते आए हैं। भारत का मुख्य शास्त्र गीता है। हम भी विद्वान थे, शास्त्र आदि पढ़ते थे; परन्तु अब समझते हैं कि हम पूरे हज्जाम थे। सभी उल्टा ही पढ़ते आए हैं। सभी हज्जाम हैं। कितने बड़े–2 टाइटल लेते हैं– डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी, श्री–2 सरस्वती। अभी जानते हैं कि सरस्वती तो ब्रह्मा की मुखवंशावली थी, उनके हाथ में बैंजो दिखाते हैं; परन्तु यह तो ज्ञान की बात है न! कोई की भी बुद्धि में न है कि सरस्वती कौन है, फिर उनको 6–8 भुजाएँ दे देते हैं। ब्रह्मा को भी भुजाएँ दिखाते हैं। तो वह कौन होंगे? वो सरस्वती माता और ब्रह्मा पिता। उनसे फिर वृद्धि होती है। सिजरा दिखाते हैं। पहले–2 हैं देवी–देवता धर्म, सर्वोत्तम धर्म; जैसे– बाबा समझाते हैं कि आबू सर्वोत्तम तीर्थ स्थान है सारी सृष्टि में; क्योंकि यहाँ शिवबाबा, ब्रह्मा–सरस्वती और तुम बच्चे बैठे हो। यादगार भी पूरा है। शिवबाबा तो है ऊँच ते ऊँच। तुम देखेंगे, शिवलिंग के ऊपर पानी पड़ता रहता है और देवताओं पर पानी नहीं डालते हैं। शिव पर पानी क्यों डालते हैं? क्योंकि ज्ञान अमृत की वर्षा की है। तो उन्होंने फिर पानी चढ़ा दिया है। किसकी भी बुद्धि नहीं चलती कि वो निराकारी ऊँच ते ऊँच है। बाकी तो हैं देवताएँ।

वो परमधाम में रहने वाला निराकार, उनकी पूजा क्यों की जाती है, माखन, दूध, फूल आदि उन पर क्यों पढ़ाते(चढ़ाते) हैं? अक और धतुरे चढ़ाते हैं। धतुरे का झाड़ होता है। तो यह सभी चीज़ शिव पर चढ़ाते हैं, कोई तो राज़ होगा ना! अभी अक कौन है, यह भी समझ सकते हैं। यह ज्ञान का बगीचा है। बाप बागवान है। उसने यह बगीचा बनाया है। उसमें ज्ञान गुलाबी फूल भी है। मोतियाँ–चम्पा के फूल भी हैं। जो पूरा न पढ़ते हैं वो हैं अक; परन्तु बच्चे तो हैं ना! कहते हैं– बाबा, हम तुम्हारे हैं, बलि चढ़ चुके; परन्तु नाम न है। पढ़ते नहीं हैं तो अक के फूल ठहरे। वो बदबुएँ ही निकालेंगे। सत्गुरु की निंदा करावेंगे। नम्बरवार फूलों का बगीचा है। स्कूल का टीचर और बच्चे जानते हैं कि यह फूल पहले नम्बर में है, यह लास्ट नम्बर में है। पढ़ते नहीं तो गोया कपूत ठहरे, बाप की निंदा कराते रहते हैं। फिर यह भी कहते हैं– महान ते महान मूर्ख, कमबख्त यहाँ है। इस(में) गॉडली स्टूडेंट्स भी आते, पढ़ते और पढ़ाते भी हैं। स्थापना और विनाश का सा० भी करते हैं, फिर चलते–2 राहू की दशा आती है तो आश्चर्यवत् भागन्ति भी हो जाते हैं– बाबा, हम आपका बन चुका हूँ तो ज़रूर स्वर्ग का मालिक बनेंगे। फिर ऐसे साजन को छोड़ भाग जाए तो फिर कहाँ जावेगा! आश्चर्यवत् बाबा का बनकर फिर हाथ छोड़ देते। अहो माया! तुम कितनी दुस्तर हो! ऐसा महान मूर्ख कब देखा! देखना हो तो यहाँ देखो। महान ते महान उत्तम भी यहाँ बनते हैं। तुम बच्चियाँ सृष्टि को स्वर्ग बनाए रही हो। बाकी नर्कवासी तो अपना विनाश कर देते। तुम अपना शुद्ध कार्य करते हो। तो महान ते महान सौभाग्यशाली भी यहाँ देखो, तो महान ते महान दुर्भाग्यशाली भी यहाँ देखो। जब तक यहाँ है तब तक कुछ महान भाग्यशाली ठहरे, फिर ऐसी सजनी, साजन को अथवा बच्चा, बाप को फारकती दे देते हैं। फारकती देने का तो अब रिवाज़ है। बहुतों को डायवोर्स देना पड़ता है; क्योंकि कामेषु–क्रोधेषु हैं। अबलाएँ बहुत मार खाती हैं। सुनने वाला तो कोई है नहीं। दुख के लिए कितने अत्याचार करते हैं। कोई धणी–धोणी नहीं। बिचारी मार खाती रहतीं। अबलाएँ बहुत करके निर्बल ही होती हैं। पुरुष लोग बहुत मार डालते हैं। कोई आपस में लड़े और तुमने देख लिया और पुलिस ने गवाही ले ली, फिर तो धक्का खाते रहो। पैसा दियो तो छोड़ देंगे। यहाँ पैसे की तो कोई बात नहीं। तुम लोग अपन पास एक पैसा भी रख नहीं सकते हो। होगा तो वृत्ति उसमें जावेगी। शास्त्रों में भी एक कहानी है– उसने कहा, यह लाठी भी छोड़ो, नहीं तो ममत्व जावेगा। देह सहित सब कुछ खाली करो, फिर बाप को ट्रस्टी बना दो। जनक ने भी अष्टावक्र को ट्रस्टी बनाया ना! वास्तव में बनाया तो बाप ईश्वर को। तुम बच्चे कहते हो– बाबा, आप तो सभी से बलवान हो। इस पुरानी दुनिया का विनाश तो होना है। बाप को ट्रस्टी बनाया जाता है तो अपना ममत्व मिट जाय। बाप जानते हैं, पैसा हाथ में होगा तो गँवाया। शरीर निर्वाह तो करना ही है। फिर श्रीमत पर चलने से उन पर रेस्पॉन्सिबुलिटी हो गई। बाबा सब कुछ आपका ही है, आप जो राय दो, वो मैं कर सकता हूँ। ऊँच ते ऊँच है श्रीमत। भारतवासी जानते हैं कि श्रीमत से ही भारत स्वर्ग बना था; परन्तु भूल गए हैं। अब देखो, आबू है सृष्टि में सर्वोत्तम श्रेष्ठ। जैसे गीता सर्वोत्तम श्रेष्ठ है, वैसे भारत खण्ड भी सर्वोत्तम श्रेष्ठ है। उनमें भी श्रेष्ठ तीर्थ यह आबू का दिलवाला मंदिर है। सोमनाथ मंदिर नहीं कहेंगे। बाप ने यहाँ बैठ सोमरस पिलाया है। अर्थात् यह सहज राज्य–योग सिखलाया है। बलिहारी इसकी है। सभी का यादगार यहाँ है। शिवबाबा का भी है, ब्रह्मा–सरस्वती, अधर कुमारी, कुँवारी कन्या का भी है। हूबहू पूरा तीर्थ है। मोस्ट वण्डरफुल बना हुआ है। यह चित्र भी बाबा ने ही बनवाए हैं। वो लोग फिर समझते हैं कि यह चित्र बी.के. ने अपने संकल्प से बनाए हैं। यह कल्पना है। यह नहीं समझते हैं, बाप ने बनवाए हैं। तुम बच्चों को तो बाबा ने दिव्य दृष्टि से दिखाया है, फिर तुमने बनाए हैं। मनुष्य इन बातों से क्या जाने! हम तो ईश्वर को सर्वव्यापी मानने वाले थे। हम क्या जाने, ड्रामा वा

कल्पवृक्ष किस चिर्या का नाम है! मनुष्य समझते हैं, यह कल्पना है। तुम कहते हो, गणेश सूँड वाला नहीं, यह सब कल्पना हैं; परन्तु यह तो दिव्य दृष्टि से बाप ने बनवाए हैं। बाबा ने खुद आकर करेक्ट किया है। बाप कहते हैं– मैं निराकार हूँ। ऐसे नहीं, कोई आकार ही नहीं है। आकार बिगर तो चीज़ नहीं होती। आकाश का भी आकार है। है तो सूक्ष्म ना! निराकार परमात्मा भी, जिसकी तुम पूजा करते हो। आत्मा भी निराकार है, निराकारी दुनिया से आए यहाँ शरीर धारण करते हैं। आत्मा है कैसे चिंगारी मिसल। चमकता है अजब तारा.... परमात्मा ही है। साढ़े तीन सौ करोड़ जो आत्माएँ हैं, हर एक में अपना पार्ट भरा हुआ है। ड्रामा के राज़ को बहुत अच्छी रीति समझना है। बड़ा वण्डरफुल ज्ञान है! ड्रामा तो अनादि बना–बनाया है। इसमें कोई बदल–सदल नहीं हो सकती। यह बना–बनाया ड्रामा फिरता रहता है। इसकी अंत नहीं होती। कब से यह ड्रामा शुरू हुआ, यह नहीं कह सकते। अनादि चलता ही आता है। यह कब पूरा होने वाला नहीं है; क्योंकि सभी एक्टर लिमिटेड हैं। इससे न कोई निकल सकते हैं, न कोई एड हो सकती है। हर एक को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। हाईएस्ट को अपना पार्ट फिर से बजाना ही है। हम कहेंगे, ये ज्ञान जो प्रायःलोप हो गया है, वो फिर से बाप देते हैं। वर्ल्ड हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट कहा जाता है न! यह अब मालूम पड़ा है कि फिर से कैसे रिपीट होता है। त्रिकालदर्शी हम सिर्फ अभी बन सकते हैं। सृष्टि के चक्र को तुम जान सकते हो, दूसरा कोई बिल्कुल नहीं। सिर्फ यह ब्राह्मण, इन्हों का तीसरा नेत्र ज्ञान का खुलता है। डिवाइन इनसाइट देने वाला बाप। वो ऊँच ते ऊँच है ही एक, दूसरा कोई है नहीं। ब्र०वि०शं० भी वर्थ नॉट पैनी हैं। हम ब्रह्मा भी वर्थ नॉट पैनी था। बाप आया है तो इनका प्रजापति ब्रह्मा नाम पड़ा। यह तो साधारण था, इनकी क्या महिमा! अब बाप इनमें आए, पतित को पावन बना (रहे) हैं। मंदिर भी यहाँ ही है। तो यह आबू सारी सृष्टि में सर्वोत्तम तीर्थ स्थान है। कल्प पहले भी यहाँ यादगार बनाया था– यह किसको पता न। ऊपर में राजाई है देवताओं की और नीचे हम तपस्या में बैठे हैं– जगतपिता, जगत अम्बा। बच्चियाँ भी हैं। पांडव भी हैं। फादर है तो मदर भी होगी। प्रवृत्तिमार्ग है न! भगवान ने सहज राजयोग सिखलाया है ब्रह्मा के तन में। तो यह बापदादा हो गया। वो ग्रैण्ड फादर और यह फादर। अथॉरिटी ग्रैण्ड फादर की है। कोई भी छोटा–बड़ा–बूढ़ा आकर ले सकते हैं। यह है जन्म सिद्ध अधिकार। 21 जन्म लिए सदा सुख का वर्सा मिलता है। मनुष्य तो शान्ति के लिए धोखा खाते रहते हैं; परन्तु यह कोई नहीं जानते कि माया रावण ने सबको अशांत किया। एक को शांति मिलने से सारी दुनिया को तो नहीं मिलेगी; इसलिए माया पर जीत पानी है, तभी शान्ति मिलेगी। बाप को याद करो तो शांतिधाम में, बाप के पास चले आओगे। तुम निर्वाण धाम में जाना चाहते हो, अच्छा, बाप को याद करो। वो तो सर्वशक्तिवान है। ब्रह्मा को सर्वशक्तिवान नहीं कहेंगे। तुम सिर्फ बाप को याद करो तो अंत मत सो गत हो जाएगी। इसमें अभ्यास बहुत चाहिए। तीर्थयात्रा पर भी जाते हैं। घर छोड़ा तो फिर बद्रीनाथ करते जावेंगे। यह तो है रूहानी तीर्थ। बाप कहते हैं– मनमनाभव। तुम नंगे आए थे। तुम मेरे पास आना चाहते हो तो मुझे याद करो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ– तुम मेरे पास आ (ज)ाएँगे। फिर और कोई को याद न करना। पैसे को भी याद किया तो यहाँ अटक जाएँगे। अंतकाल जो नारायण सिमरे जीवनमुक्ति पाए। कौन कहते हैं? त्रिलोचन। तीसरा नेत्र देना(ने) वाला बाप तीसरा नेत्र खोलने वाला है। है ही वो बाप ज्ञान का सागर। बाकी तो सब अँधे ही अंधे हैं। अभी दशहरा आएगा, फिर रावण का बुत बैठ जलाएँगे। सतयुग में नहीं जलाएँगे। यहाँ बड़े–2 राजाएँ, साधु–संत आदि सब जाते हैं। सब तो एक जैसे नहीं हैं। तो शिवबाबा कहते हैं कि मीठे–2 लाडले बच्चे, सुनते हो? आत्मा सुनती है। संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। आत्मा ऑरगन्स से एक्ट में आती है। नंगे अक्षर सुनकर वो फिर नागे बन पड़े हैं। बहुत प्रकार के सन्यासी हैं। एक मत थोड़े ही है।

सतयुग में है एक मत। अद्वैत मत। श्रीमत भगवान की ही मानुष से देवता बनाते(ती) हैं; क्योंकि वो है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ, और कोई की महिमा नहीं है। वर्ल्ड ऑलमाइटी फादर अथॉरिटी है। क्रियेटर उस एक को कहेंगे। जो बाप की महिमा है, वो और की नहीं। तो बाप है मोस्ट बिलवेड। उनसे बुद्धियोग लगाना है। ब्रह्मा–सरस्वती तो बीच के हैं। तुमको वर्सा उनसे लेना है। तो उनको याद करना पड़े। ग्रैंड फादर से वर्सा लेने बाप का बच्चा ज़रूर बनना पड़े। ब्राह्मण है ब्रह्मा की मुखवंशावली। यह है सर्वोत्तम धर्म। ऐसे नहीं कि सभी धर्म एक समान है। सभी एक बाप की संतान हैं। सभी को अपना पार्ट मिला हुआ है। बाबा कहते हैं– जो सुनकर और फिर सुनाते हैं, काँटों को फूल बनाते हैं, तो उसका सबूत आना चाहिए– कितने रिक्रूट्स बनाए हैं, उनमें फिर कितने वारिस बनाए हैं। प्रजा भी बनानी है। मालूम पड़ जाता है फलाने सेन्टर पर कितनी कलियाँ, कितने फूल, वारिस बनने के अधिकारी हैं। वारिस वो बनते हैं जो पूरे बलि चढ़ते हैं। फिर है पुरुषार्थ पर मदार। गोद में आने वाले को वर्सा तो मिल ही जाता है। गोद में न आने वाले को फिर प्रजा में कहेंगे। प्रजा में भी साहूकार–गरीब नम्बरवार हैं। बड़ी राजधानी स्थापन हो रही है। झट मालूम पड़ जाता है कि इस समय इनका शरीर छूटे, तो किस अवस्था को पावेंगे। बाबा झट बतलाय देंगे। समझ तो सकते हैं न, रिक्रूट्स न बनाए तो क्या पद पाएँगे। नम्बरवन मेहनत है योग लगाने की। प्रैक्टिकली याद करना है। ऐसे कोई याद करते नहीं हैं। शिवबाबा को याद कर भोग लगाते हैं; क्योंकि वो खिलाते हैं। याद किया जाते हैं कि कुछ वासना लेवें, नहीं तो चोर कहलावेंगे। उनको याद तो करना है न! ऐसे नहीं भोग लगाय खलास, फिर सब खुद खा जाए। भोजन खाते याद करते ही रहना है, नहीं तो तुम विजयमाला के आठ नम्बर में नहीं आवेंगे। इसमें रेस है। बाबा तरीका तो बतला(ते) हैं। इसमें संग भी चाहिए। एक/दो को याद दिलाते रहेंगे तो याद आती रहेगी। पुरुषार्थ करने से अंत में निरंतर याद रहेगी। बीज और झाड़ को समझना तो सहज है। मूल बात है मनमनाभव की। यह है वशीकरण मंत्र। लिखा हुआ है– तुलसीदास चंदन घिसे तिलक देत रघुवीर। रघुवीर राम की बात नहीं। शिवबाबा को याद करना है, मुख से जपना नहीं है। शिवबाबा और वर्से को याद करना है। वर्सा याद आने से खुशी का पारा चढ़ता है। कई समझते हैं कि हम तो शिवबाबा के बच्चे हैं, वर्सा मिल जावेगा; परन्तु नहीं, मासी का घर नहीं है। लम्बी खजूर है। गिरे तो फिर चकनाचूर हो जाते हैं, चण्डाल का जाकर जन्म लेते हैं। मेहनत है। जितना हो सके याद करो। जो टाइम मिले फट से याद में लग जा(ना) चाहिए। स्नान समय अथवा उठते–बैठते याद काम में आवेगी। विकर्मों का बोझा बहुत है। हम कर्मातीत हो जावें(गे) फिर यह खाँसी आदि थोड़े ही आवेंगे। यह सभी कर्मभोग है। तब तक तो पुरुषार्थ करना है श्रीमत पर। फिर अंत मते सो गते हो जावेगी। माया बड़ी दुस्तर है, योग लगाने न देती है। यह बॉक्सिंग है। चोटे तो अनेक प्रकार की खावेंगे। तुम रुस्तम बने हो तो माया भी कम रुस्तम नहीं है। एक गीत है न– यह लड़ाई है दिए और तूफान की। तूफान बहुत आते हैं, उनको समझना होता है। बड़ी जबरदस्त लड़ाई है। अच्छा, सुनना इतना है, जो फिर धारण भी हो सके।

चेम्बूर :– बाप को और वर्से को याद करना तो बहुत सहज है, छोटे बच्चे तो नहीं हो। ऑरगंस छोटे–बड़े होते हैं, आत्मा तो छोटी–बड़ी नहीं होती। बाप से 21 जन्म स्वर्ग का सुख मिलता है। इसको कहा जाता है– गॉड फादरली बर्थ राइट। स्वर्ग सतयुग को कहा जाता, त्रेता को नहीं। सिलवर की खाद सच्चे सोने में पड़ने लग पड़ती है। इन बातों को पूरा समझना और धारण करना है। जो धारण करते हैं वो महारथी हैं। महारथी वो जो सदैव सर्विस में लगे रहते हैं। बाप की सेवा लेकर फिर अगर सेवा न करेंगे तो धर्मराज के बहुत डंडे खावेंगे। अभी भी बच्चों को सूक्ष्मवतन में बहुत हेन्टर लगते हैं। बाबा किसी को छोड़ते नहीं हैं। बाप कहते हैं– तुम हो मोस्ट बिलवेड चिल्ड्रेन्स। तुम बाप को सहयोग दे नर्क को स्वर्ग बनाते हो। नम्बरवार तो सभी होते ही हैं। बाप कहते हैं– जो मेरे समान सेवा में तत्पर रहते हैं वो हैं बिलवेड मोस्ट। सर्विस करने से पद भी मिलता है। वो बाप इन द्वारा मिल्कियत देते हैं। याद उनको करना है। ऐसे नहीं, मम्मा–बाबा (में) मोह चला जावे। मेरे तो एक दूसरा न कोई। दलालों को न पकड़ना है। इनाम ब्राह्मणों को सेठ से मिलता है सर्विस अनुसार। अच्छा। ॐ

मधुबन स्वर्ग आश्रम से अम्बाला सिटी के रघुनाथ भाई की ईश्वरीय याद स्वीकार करना जी।